मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १२१ • मई-२०१७

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

1

2

3

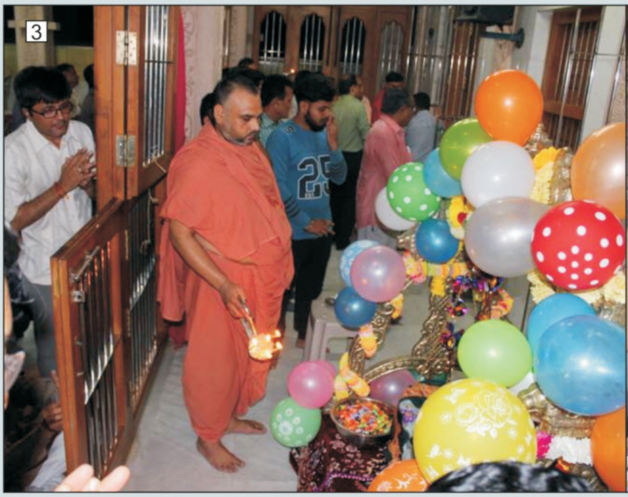

4

(१) रामनवमी - श्रीहरि जयंती प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री बालस्वरुप घनश्याम महाराज का अभिषेक करते हुए और रात्री के समय ठाकुरजी को श्री नरनारायणदेव के सन्मुख झुलाते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । (२) कर्मशक्ति (बापुनगर) के १९ वें पाटोत्सव उत्सव पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं वक्ता शा. स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी कथा - पारायण का रसपान कराते हुए । (३) अंजली मंदिरमें रामनवमी - श्री घनश्याम जन्मोत्सव की आर‌ती के दर्शन । (४) स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी, मूली मंदिर के महंत स्वामी एवं शा. स्वामी भक्तिनंदनदासजी और महंत विश्वप्रकाशदासजी मांडल (विरमगाम) मंदिर के पाटोत्सव अवसरपर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ११ ● अंक : १२१

मई-२०१७

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	भगवान होने का प्रायश्चित	०६
०४.	हे नाथ नित्य दर्शन दीजिये	०७
०५.	"ऐसे संत ब्रह्मांड में कही नही"	०९
०६.	परिपक्वनिश्चयवाले भक्त का लक्षण तथा उसकी प्राप्ति	११
०७.	प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का श्रीराजा के साथ ओस्ट्रेलीया धर्मप्रवास (२०१७)	१३
०८.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०९.	सत्संग बालवाटिका	१६
१०.	भक्ति सुधा	१८
११.	सत्संग समाचार	२२

अस्मदीयम्

जीवन जीने की कला भगवान स्वामिनारायण ने हम सभी को दी है। लेकिन हम लोग वैसा वर्तन नहीं करते । आज के युवकों में पढना (वांचना) एकदम कम हो गया है । यह सबसे आवश्यक है इसलिए वांचने की टेव सभी को अवश्य रखनी चाहिये ।

अपने नंद संत अपार ग्रंथो की रचना किये । जिन ग्रन्थो के ऊपर आज तक सैकडो लोग शोधकार्य करके वी.एच.डी. की डीग्री प्राप्त कर चुके हैं । कवि सम्राट कवि ब्रह्मानंद स्वामी, प्रेमानंद स्वामी, देवानंद स्वामी, निष्कुलानंद स्वामी, भूमानंद स्वामी इत्यादि संतों के एक-एक पद के ऊपर विवेचन किया जाय तो भी आज के युग में संभव नहीं है। अपने नंद संतो द्वारा लिखे गये अनेकों ग्रंथ यदि आपको उनका दर्शन करना हो तो श्री स्वामिनारायण म्युजियम में संभव है । श्रीहरि के समय में संतो ने कितना श्रम किया है उनके शास्त्रों के ऊपर से ख्याल आता है।

हमारा सभी युवकों से अनुरोधहै कि मोबाइल का खूब उपयोग करें लेकिन संप्रदाय के अमूल्य ग्रंथों का वांचन अवश्य करें। अपने आने वाली पीढी को भी यही संस्कार दीजिएगा। इस चातुर्मास में वचनामृत, श्रीमद् सत्संगिजीवन, श्रीमद् शिक्षापत्री भाष्य, श्रीमद् सत्संगिभूषण, भक्त चिंतामणी, नंद संतो की वातो, इन सभी में से कुछ वांचियेगा तभी इस अलौकिक संप्रदाय का तथा श्री स्वामिनारायण भगवान का सर्वोपरिता का यथार्थ अनुभव होगा । इससे अपना इहलोक तथा परलोक सुधरेगा ही साथ में श्रीहरि अपने अलौकिक अक्षरधाम कानिश्चितरुप से सुख प्रदान करेंगे । जब अवस्था होगी तब कुछ नहीं हो पायेगा । इसलिये युवा वस्था में ही सभी लोग सत्शास्त्रों का वांचन करें, इसी में कल्याण निहित है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

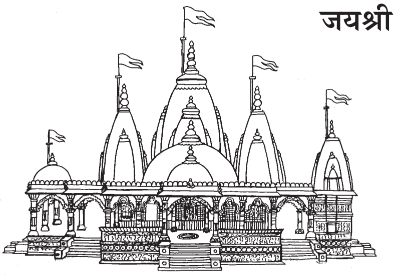

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०१७)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजार (कच्छ) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर बाकरोल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर निकोल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । मणीनगर में हरिभक्त के यहाँ पदार्पण ।

१०-११ श्री स्वामिनारायण मंदिर केरा (कच्छ) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।बोपल में हरिभक्त के यहाँ पदार्पण ।

१४ से २५ अमेरिका धर्म प्रवास

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर नरेला (पंचमहाल) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२८ से ३० श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) श्री घनश्याम माहाराज के ७५ वें वार्षिक पाटोत्सव महोत्सव एवं श्री नारायणदेव के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

(५-३-१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापुनगर पाटोत्सव एवं श्री घनश्याम महाराज के प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण एवं घाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण) ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(अप्रैल-२०१७)

१ ओस्ट्रेलीया मेलबोर्न श्री स्वामिनारायण मंदिर में अपनी अध्यक्षता में सत्संग युवा शिबिर एवं सीडनी (ब्लेक टाउन) श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२९ से ३० श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज श्री घनश्याम माहाराज के ७५ वें वार्षिक पाटोत्सव महोत्सव एवं श्री नारायणदेव के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

भगवान होने का प्रायश्चित

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

गोविंदानन्द स्वामी हनुमानगढी अयोध्या में चारसो वैरागी साधुओं के गुरु पद पर थे । वे पश्चिम भारत की द्वारिका तीर्थ यात्रा में निकले । बीच में पंढरपुर में श्री नीलकंठ वर्णी दो महीने के लिये रुके थे उनका दर्शन किये ।

एक-दो दिन के बाद वहाँ से आगे चले उनके मन में अतिशय वैराग्य था । लेकिन जब वहाँ से आगे निकले तो बीच में माया स्त्री के रुप में नाना अलंकारो से सुसज्ज-हीरा-मोती-इत्यादि आभूषण साथ में लेकर सामने आई और कहने लगी कि ए सभी आभूषण तथा मैं आपकी, आप मेरे पति मैं आपकी पत्नी आप जैसा कहेंगे वैसा करुंगी ।

गोविन्दानंद स्वामी तथा माया दोनो साथ चले । आगे जाते समय एक गाँव आया । गाँव से बाहर उसे रोक कर कहे कि तूं यहीं रुक, मैं गाँव में से भिक्षा मांगकर लाता हूँ । स्त्रीने कहा कि स्वामी ! इस घड़े में से धन लेकर बजार में से खरीदकर ले आइये । गोविंदानंद स्वामीने कहा कि नहीं, भिक्षावृत्ति साधु का धर्म हैं । इतना कहकर अपना एक कपडा वहाँ रखकर द्वारिका की यात्रा में आगे निकल पडे । तीन दिन तक कहीं रुके भी नहीं है । योग माया को भ्रमित करके आगे चले गये । लोज में रामानंद स्वामी का दर्शन करके, भगवान में निश्चय भाव करके द्वारिका की यात्रा लोज में पूर्ण करके वहाँ रहने लगे । गोविंदराम नाम में से गोविंदानंद रखा गया । रामानंद स्वामी के पचास सेवक में से एक सेवक होकर सेवा करने लगे । थोडे समय बाद नीलकंठवर्णी लोज पधारे तथा डेढ वर्ष के स्वल्प समय में गुरु ने २१ वर्षी युवान नीलकंठ वर्णी को जेतपुर मे उद्धव संप्रदाय की गादी दे दी ।

रामानंद स्वामी के मुख्य शिष्य मुक्तानंद स्वामी को छोडकर पचास में से १२ शिष्य नीलकंठ वर्णी को अनुगामी बनाने में विरोधकरने लगे । वहाँ से निलकर स्वतंत्र ढंग से गलत प्रचार भी करते और स्वयं को रामानंद स्वामी का अनुगामी बताते । स्वयं भगवान बनकर पुजाने लगे ।

अपनी आध्यात्मिक सिद्धि, अपने गुणों का चारो तरफ प्रचार करते और गुरु के निर्णय का दुष्प्रचार करते ।

उसी में से रामदास स्वामी – गोविंदानंद स्वामी – देवानंद स्वामी ये तीनो संत जेतलपुर में रहते थे ।

श्रीहरि स्वामिनारायण भगवान विचरण करते हुये जेतलपुर पधारे । गंगामां के घर भोजन के लिये पधारे ।

गंगा मां ने कहा कि वे तीनो विमुख आपके विरोधमें गाँव-गाँव प्रचार करते हैं । श्रीहरिने कहा कि – गंगामां ! आप इन तीनों को बुलवाइये में दर्शन करना चाहता हूँ । प्रभु जो आपकी निंदा करता है उसका दर्शन कैसा ? प्रभुने कहा कि वे साधु बहुत बड़े हैं । वे लोग रघुनाथदास की वाणी सुनकर भ्रमित हो गये हैं । आप कोई अच्छे व्यक्ति को भेंजकर बुलवाई उनकी हमें पूजा करनी है ।

गंगामां एक विश्वस्त व्यक्ति को भेंजकर तीनो संतो को जेतलपुर बुलवाई ।

श्रीहरि अक्षर फूलवाडी में मौलश्री वृक्ष के नीचे विराजमान थे । उस समय तीनो संत वहाँ आये । श्रीहरि के रुप में साक्षात् श्री कृष्ण का दर्शन किये । इतने में रामानंद स्वामी को देखे । उनके भीतर का जो दोष था वह भस्मीभूत हो गया । भक्ति का भाव प्रगट हो गया

पेईज नं. १०

हे नाथ नित्य दर्शन दीजिये

- शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

॥ ललित छन्दः ॥

अतिमनोहरं सर्वसुन्दरं तिलकलक्षणं चंचलेक्षणम् ।
विबुधवन्दितं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥१॥
मदनमोहनं प्रेमदोहनं नयनगोचरं भक्तसंचरम् ।
भुवि सुदुर्लभं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥२॥
निजजनैः सदा वाञ्छितंहृदा परसुखावहं हृत्तमोपहम् ।
परममंगलं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥३॥
हृदयरोचनं बद्धमोचनं विगतशोचनं दीर्घलोचनम् ।
मृदुसितांम्बरं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥४॥
मधुरभाषणं पुष्पभूषणं विजितदूषणं शोकशोषणम् ।
प्रहसदाननं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥५॥
कुसुमशेखरं कोमलान्तरं सदयदर्शनं दुःखकर्शनम् ।
विधिहरार्चितं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥६॥
परमपावनं लोकभावनं कुटिलकुन्तलं पुष्पकुण्डलम् ।
भवभयापहं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥७॥
सकलसिद्धिभिः सर्वऋद्धिभिः श्रितपदं सदा योगिभिर्मुदा ।
तदिदमेवहि स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥८॥

॥ इति सत्संगिजीवनस्थ श्रीहरिप्रार्थनास्तोत्रं ॥
तृतीय प्रकरण, ४३ अध्याय, श्लोक ४७-५४

भगवान श्री स्वामिनारायण वर्षो वर्षो तक जहाँ रहते वहाँ पर कृष्ण जन्माष्टमी, रामनवमी, प्रबोधिनी इत्यादि बड़े बड़े उत्सव करते जिस में हजारो भक्त एकत्रित होते और प्रभु उनके मनोरथ को पूर्ण करते । जिनके मनोरथ पूर्ण होते वे प्रभु के अनन्याश्रित हो जाते और दृढता के साथ नियम का पालन करते । उत्सव के समय जो भी भक्त हों उन्हें अन्तकाल में उत्सव का स्मरण हो जाय या श्रीहरि की स्मृति हो जाय तो अक्षरधाम की प्राप्ति का स्वयं श्रीहरिने वचन दिया है गढपुर के एभल खाचर का पूरा परिवार उत्सव करके श्रीहरि को प्रसन्न करने में लगा था । जिसमें स्त्री भक्तों में जीवुबा - लाडुबा इत्यादि को एसा था कि दीपावली का भव्य उत्सव करके प्रबोधिनी एकादशी तक श्रीहरि यही रुकें भक्त लोग भी यहाँ का उत्सव करके स्वस्थान पर जायं । संत-भक्त स्त्री-पुरुष श्रीहरि की स्तुति किये और दर्शन देने की प्रार्थना किये । जो इन श्लोको से प्रगट होता है ।

अतिमनोहरं सर्वसुन्दरं तिलकलक्षणं चंचलेक्षणम् ।
विबुधवन्दितं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥१॥

प्रबोधिनी के उत्सव में अन्य देशों से आई हुई सभी स्त्रियों ने भगवान श्री स्वामिनारायण की स्तुति करती हैं । हे स्वामिनारायण आपकी मूर्ति अत्यंत सुंदर है । आपके अवतारो के स्वरुप चाहे जितने भी हुये है, उसमें से इस स्वरुप में नासिका के समीप तिलक चिन्ह है । अथवा शास्त्रो में कहे गये ऊर्ध्वपुंड्र वाला ललाट, अति चंचल नेत्र से अपने भक्तों को देख रहे हैं । देवताओं से वंदित ऐसे आप हे स्वामीनाथ आपकी दिव्य मूर्ति इस लोक में सदा दर्शन का लाभ देती रहे ऐसी हम प्रार्थना करते है ॥१॥

मदनमोहनं प्रेमदोहनं नयनगोचरं भक्तसंचरम् ।
भुवि सुदुर्लभं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥२॥

जगत में सभी को मोहित करने वाले काम देव को भी जो मुग्धकरदे ऐसी आपकी लोभावनी मूर्ति है । जिस के दर्शन से वारंवार प्रेम का भाव उमड पडता है । ऐसी आप की द्रष्टि है । ऐसी प्रत्यक्ष स्वरुप जो आपकी मूर्ति है उसका दर्शन एकान्तिक भक्त को ही होता है । इस पृथ्वी पर तो अन्यों के लिये अत्यन्त दुर्लभ है । हे स्वामीनाथ आपकी दिव्य मूर्ति इस लोक में सदा दर्शन का लाभ देती रहे ऐसी हम प्रार्थना करते है ॥२॥

निजजनैः सदा वाञ्छितंहृदा परसुखावहं हत्तमोपहम् ।
परममंगलं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥३॥

हे परमेश्वर आपके एकान्तिक भक्त जो आपके स्वरुप को अपने हृदय में सदा रखने की इच्छा रखते हैं। कारण यह कि - उस स्वरुप के धारण करने से भक्तों के हृदय में तत्काल अन्धकार का नाश हो जाता है तथा प्रकाश का उदय हो जाता है । जिससे सभी प्रकार के मंगल की प्राप्ति होती है । अर्थात् परम मोक्षरुप आपके धाम की प्राप्ति होती है । हे स्वामीनाथ आपकी दिव्य मूर्ति इस लोक में सदा दर्शन का लाभ देती रहे ऐसी हम प्रार्थना करते है ॥३॥

हृदयरोचनं बद्धमोचनं विगतशोचनं दीर्घलोचनम् ।
मृदुसितांम्बरं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥४॥

आपके एकान्तिक भक्तों के हृदय में अत्यन्त रुचिकर आपका दिव्य प्रकाश आनंदित करने वाला है। तथा अज्ञान रुपी त्रिगुणात्मिका माया के बंधन से छोडाने वाला है । लोक रहित-आनंद स्वरुप है । दीर्घ-विशाल दृष्टि भक्तों की सुरक्षा करने वाली है । सदा कोमल श्वेत वस्त्रों को धारण करते हैं । हे स्वामीनाथ आपकी दिव्य मूर्ति इस लोक में सदा दर्शन का लाभ देती रहे ऐसी हम प्रार्थना करते है ॥४॥

मधुरभाषणं पुष्पभूषणं विजितदूषणं शोकशोषणम् ।
प्रहसदाननं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥५॥

अपने भक्तों को अमृतमय मधुरवाणी से उपदेश करने के लिये भाषण देते हैं । सदासात्विक तथा सरल ऐसे सुगन्धित पुष्पों के आभूषण आप धारण करते हैं। भक्तों के हृदय में मन-कर्म-वचन से निर्दोष करने वाला आपका स्वरुप है । दर्शन करने मात्र से सभी प्रकार के शोकनष्ट हो जाते हैं । अपने एकांतिक भक्तों को प्रसन्न मुखमुद्रा से देखते रहते हैं । हे स्वामीनाथ आपकी दिव्य मूर्ति इस लोक में सदा दर्शन का लाभ देती रहे ऐसी हम प्रार्थना करते है ॥५॥

कुसुमशेखरं कोमलान्तरं सदयदर्शनं दुःखकर्शनम् ।
विधिहरार्चितं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥६॥

हे प्रभु आप रंगबिरंगी सुगन्धित पुष्पों की माला धारण करने वाले हैं । अपने भक्तों के कष्ट को देखकर तत्काल हृदय द्रवित हो जाता है । ऐसा कोमल हृदय कमलवाला है । सदा भक्तों के ऊपर दयामय दृष्टि रखने वाले हैं । शरण में आने वाले भक्तों को सदा दुःख से निकालते हैं, इसी लिये तो ब्रह्मा-शिव इत्यादि देवता भी आपकी सदा पूजा करते हैं । ऐसे स्वामीनाथ आपकी दिव्य मूर्ति इस लोक में सदा दर्शन का लाभ देती रहे ऐसी हम प्रार्थना करते है ॥६॥

परमपावनं लोकभावनं कुटिलकुन्तलं पुष्पकुण्डलम् ।
भवभयापहं स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥७॥

हे प्रभु आपके चरण का जहाँ-जहाँ स्पर्श होता है वहाँ-वहाँ पावन करने वाला है । ऐसा आपका स्वरुप है। जो सभी को प्रिय लगने वाला है । आप अपने मस्तक पर काला केश धारण किये हुए हैं । कान के ऊपर पुष्प का कुंडल धारण किये है । दर्शन करने वाले भक्त जन्म मृत्यु के भय से मुक्त हो जाते हैं । ऐसे स्वामीनाथ आपकी दिव्य मूर्ति इस लोक में सदा दर्शन का लाभ देती रहे ऐसी हम प्रार्थना करते है ॥७॥

सकलसिद्धिभिः सर्वऋद्धिभिः श्रितपदं सदा योगिभिर्मुदा ।
तदिदमेवहि स्वामिनाथते वपुरिहास्तु नो नित्यदर्शने ॥८॥

हे श्रीहरि आपके चरणों में तो अणिमादिक आठसिद्धि निवास करती है । और आपके चरणों में ही भक्तों को रिद्धि-सिद्धि तथा समृद्धि मिलती है । इसी लिये जीव मात्र आपका आश्रय चाहता है । अष्टांगयोग को सिद्ध करने वाले बड़े-बड़े योगी भी आपके चरण का आश्रय लेते हैं । ऐसे स्वामीनाथ आपकी दिव्य मूर्ति इस लोक में सदा दर्शन का लाभ देती रहे ऐसी हम प्रार्थना करते है ॥८॥

“ऐसे संत ब्रह्मांड में कहीं नहीं”

– अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अमदावाद)

श्री कारियाणी के दूसरे वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं कि ''आवा संत ब्रह्मांड मां क्यांय नथी अने आ महाराजविना बीजो कोई भगवान नथी । भगवान तथा भगवान के संत को समझाने वाला यह वचनामृत है।

महाराज के विना कोई भगवान नहीं है ऐसा भाव रखकर भजन-भक्ति करें, तथा श्रीहरि के आश्रित संत के विषय में ''आवा संत ब्रह्मांडमां क्यांय नथी''इस तरह का संतो के प्रति माहात्म्य समझे तो उसके लिये नैमिषारण्य क्षेत्र तो यहीं पर है।

श्री सहजानंद स्वामी महाराज के साथ पांचसौ परमहंस थे। इसके अलांवा दास पंक्ति के तथा सन्यासी तो अन्य ही थे । ए सभी संत कैसे थे तो निष्कुलानंद स्वामी लिखते हैं –

''एक एक नाममांहि मानो मुनिनो वृंद छे''

अर्थात् एक एक संत में मुनिवृंदका सामर्थ्य समाया हुआ है। धारे तो एक क्षण में ब्रह्मांड का प्रलय कर सकते हैं। फिर भी महाराज की आज्ञा में दासानुदास बनकर रहते हैं।

एकबार महाराजने प्रचंड ठंढीमें संतो को चार हाथ का बोरा बिछाने ओढने को दिये । ब्रह्मानंद स्वामी तो छ फुट के थे । उन्हें यह बोरा उन्हें माप से कैसे होगा । थोडा दुःखी हुये । महाराज इस वात को समझ गये । दो दिन के बाद महाराज पूछे स्वामी कैसा लग रहा है ? तब स्वामीने कहा कि महाराज ! सारे ब्रह्मांड में आप जैसा कोई भगवान नहीं, इसलिये चार हाथ का बोरा बहुत मीठा लगता है।

उस समय ब्रह्मानंद स्वामी वडताल में थे । श्रीजी महाराजने आज्ञा की कि स्वामी आप मेरे साथ चलिये । स्वामी अपने आसन पर भी नहीं गये और महाराज के साथ चल दिये ।

श्रीहरि के समकालीन अंग्रेजी पादरी हेबर श्रीहरि को मिलने के लिये आतुर था । २६ मार्च १८२५ को नडीयाद में भेंट हो गई । एक ख्रिस्ती धर्मावलम्बी के मन में ऐसा भाव था कि सहजानंद को धर्मपरिवरनत करके अपना लिया जाय तो अपने आप इनके भक्त भी हमारी तरफ आजायेंगे । बाद में सभा में खूब संवाद हुआ । बीसप हेबरने कहा कि हमारे पास वेतन भोगी सैनिक हैं आपके पास सेवक ही सैनिक हैं इसलिये तथा सचरित्रता को देखकर हम से आप सबकुछ में अधिक हैं।

बीशप ने बहुत सारे प्रश्न किये सभी का उत्तर बड़ी सरलता से महाराज ने दिया । उसके मन में हुआ कि स्वामिनारायण हमें या हमारे धर्म का परिवर्तन करने के लिये नडीयाद आये हैं । श्रीहरि की सभी वातो में भगवान - भगवान के संत की बात आती हैं ''श्रीहरि कहते हैं कि पोतानी प्रकृति गमे तेवी कठण होय तेने मूकीने भगवान तथा साधु ते कहे ते प्रमाणे सरलपणे वर्ते ए प्रकारे जेनी समझण होय तेने गमे तेवो आपत्त काल पडे तो पण भगवान नो आश्रय न टले''।

ऐसे माहात्म्यज्ञान के साथ निश्चय कैसे आवे ? तो आवा संत ब्रह्मांडमां क्यांय नथी'' इस तरह समझकर संत के प्रति आत्मीयपना रखने में ही निश्चय होगा .

कितने लोग कहते हैं कि पहले के संत कितने अच्छे थे अब तो सबकुछ बिगड़ गया है । अरे भाई कुछ नहीं विगड़ा है, आज भी वैसे ही संत समाज-सत्संग में विचरण कर रहे हैं । मंदिर में आने के बाद मात्र श्री नरनारायणदेव का ही दर्शन करके वापस नहीं जाना चाहिये, मंदिर में वंदनीय संतो के साथ बैठकर सत्संग करना चाहिये । उनके पास जाकर जय स्वामिनारायण करके आदर के साथ सत्संग करने से अन्तर में भाव जगेगा ।

संत निर्मलमन के होते हैं, उनके भीतर छल कपट नहीं होता । यदि संत प्रवृत्तिशील ही रहें, श्री नरनारायणदेव देश तथा श्री लक्ष्मीनारायण देव देश श्रीहरि द्वारा विभक्तदोनो गादियों की आज्ञा की अवहेलना करते हों धर्मवंशी आचार्य की अवहेलना करके मात्र अपनी प्रतिभा से समाज को आत्मसात करते हो तो ऐसे संतो से सचेत रहना चाहिये ।

इसके अलांवा श्री नरनारायणदेव के परिसर में रहते हैं और श्री नरनारायणदेव तथा आचार्यपद की महिमा को समझकर सत्संग में प्रवृत्त रहे तो ऐसे संत प्रामाणिक कहे जायेंगे, तभी हम सभी के लिये ''आवा संत ब्रह्मांडमां क्याय नथी'' यह बात सही कही जायेगी ।

प.पू. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री भी अपने वक्तव्यो में प्राय: ऐसे ब्रह्मनिष्ठ संतो के माहात्म्य को कहते रहते हैं । ऐसे संत भले एकाधकम हों प्रमाण में साधन सम्पन्न हों परंतु श्री नरनारायणदेव के मूल की वात करते हों, उनकें आश्रय को न छोडे तो वे संत ब्रह्मनिष्ठ ही हैं । इसके अलांवा आडंबर फैलाने वाले तो अनेक सडक पर घूमते मिलते ही हैं ।

मंदिर में आयें और संतो के सामने झुकें नही श्री स्वामिनारायण बोले नहीं तो ऐसे दर्शन को भगवान कभी स्वीकार कर सकते हैं क्या ? महाराजने स्वयं कहा है कि संतो के सामने मान नहीं रखना चाहिए । दासानुदास रहना चाहिए । संत तिरस्कार भी करें तो भी उसे तिरस्कार नहीं मानना चाहिए ।

संतो के प्रति सन्माननीय भाव रखना, सरल वर्तन रखना चाहिए । संत ही सच्ची समझ देने वाले साधन हैं । जो सत्संग को समझावें वे संत । इस लिये भगवान तथा भगवान के संतो के आगे मान नहीं रखना चाहिए । दासानुदास होकर निर्मानीपना जैसा वर्तन करना चाहिए ।

अने तेथीज संत समागमरुपी नैमाषारण्यक्षेत्रज्यां देखाय त्यां कल्याण ने इच्छवुं अने अति दृढ मन करीने रहेवुं ।(सारंगपुर-७)

''आवा संत ब्रह्मांड मां क्यांय नथी'' ऐसी भावना दृढ हो बाद में ही महाराज के विना (श्री नरनारायणदेव के विना) दूसरे कोई भगवान नहीं'' ऐसा यथार्थ ज्ञान अथवा श्रीहरि का माहात्म्य समझ में आयेगा ।.

अनु. पेईज नं. ६ से आगे

और आंखे भर आई । दोनो हाथ जोड़कर वंदना करने लगे । हम आपको तथा रामानंद स्वामी को पहचान नहीं पाये । निन्दा करने के अपराधी हैं । हे महाराज ! हम भगवान होकर पुजवाये इसका प्रायश्चित बताइये । श्रीहरिने कहा कि गले में प्याज की माला पहनकर जहाँ-जहाँ आप पूजवाये तथा मेरी निंदा किये वहाँ-वहाँ जाकर भिक्षा मांगिये । प्रायश्चित हो जायेगा । यह सुनकर प्रायश्चित के लिये तीनो संत गाँव गाँव प्याज की माला पहनकर घूमने निकले । उस समय दयालु श्रीहरिने उन लोगों को वापस बुलाकर प्रायश्चित्त से मुक्त किया ।

उन तीनो संतो को कल्याण का मार्ग समझ में आया तथा भगवान में निश्चय हुआ । यह बात स.गु. अद्‌भुतानंद स्वामी की वातों में लिखी हुई है ।

स.गु. रामदास स्वामी तो इतने बड़े संत थे कि रामानंद स्वामी के मंडल के प्रथम संत थे । भुज के सुंदरजी सुतार का मान उतारने के लिये १८ जनों पर पत्र लिखकर जेतलपुर में रामदास स्वामी के पास दीक्षा लेने के लिये भेजे ।

रामदास स्वामीने जेतलपुर में काशी तीर्थ का दर्शन कराकर काशी दर्शन के वचन को पूर्ण किया ।

भगवान को छोड़कर जो साधु भगवान बनकर पुजवाने लगता है वह सभी से अधिक पापी है । भगवान को अच्छा लगता हो वहीं करने में श्रेयष्कर है । भक्ति करना तथा भगवान के तथा भगवान के भक्त को प्रसन्न

परिपक्वनिश्चयवाले भक्त का लक्षण तथा उसकी प्राप्ति

– गोरधनभाई वी. सीतापरा

स्वामिनारायण संप्रदाय में नियम, निश्चय तथा पक्ष का विशेष महत्व है । इन तीन अंगो की परिपक्वता जिन भक्तों को हो उसे पक्का भक्त कहा जायेगा । इन तीनों में से निश्चय की वात वचनामृत के आधार पर स्वयं श्रीजी महाराज के वचनानुसार लिख रहा हूँ।

श्रीजी महाराज कहते है – जेने निश्चय मां कसर होय तेने ज्यारे भगवान मां कांई सामर्थी देखाय त्यारे अति आनंद थाय, अने ज्यारे सामर्थीने देखाय त्यारे अंतर झांखुं थई जाय । अने पोताना हृदयमां भूंडा संकल्प थता होय अने तेने टाले तोय पण टले नहीं । त्यारे भगवानमां अवगुण परठे जे, ''हुं आटला दहाडाथी सत्संग करी करीने मरी गयो तोय पण भगवान मारा भूंड घाट टालता नथी.'' एवी रीते भगवानमां दोष परठे । पछी पोताने विषे जो कामादिक दोष होय ने भगवान ने विषे पठा परठे, तेवो जे होय ऐनो परिपक्वनिश्चय न कहेवाय।

जेने परिपक्वनिश्चय होय तेने तो मनमां एम रहे जे 'मारे सर्व प्राप्ति थई रही छे । अने ज्यां प्रत्यक्ष भगवान रह्या छे त्यांज परमधाम छे अने आ संत सर्वे ते नारद, सनकादि जेवा छे । अने सत्संगी सर्वे ते तो उद्धव, अक्रूर, विदुर, सुदामा तथा वृन्दावनना गोप तेवा छे । अने जे बाईओ हरिभक्त छे ते तो जेवी गोपिओ तथा द्रोपदी, कुंताजी, सीता, रुक्मिणी, लक्ष्मी तथा पार्वती एवी छे । अने हवे मारे कांई करवुं रह्युं नथी अने गोलोक, वैकुंठ, ब्रह्मपुर तेने हुं पामी रह्यो छुं । एवी रीतना घाट थाय अने पोताना हृदयमां अति आनंद वर्ते । एवी रीते जेना अंतरमां वर्ततु होय तेने परिपक्वनिश्चय जाणवो ।

एवी रीते महिमाए सहित जे भगवान नो निश्चय ते जेने हृदयमां दृढपणे थयो होय तेने काल–माया–क्रम कोई बंधन करवा समर्थ नथी ।माटे एवी रीते तत्वे करीने जे भगवानने जाणे तेने कांई करवुं रह्युं नथी ।

जेने अति दृढ निश्चय होय तेना लक्षणो वर्णवता श्रीजी महाराज कहते हैं कि – पोते अत्यन्त त्यागी होय तोय पण ते पासे तेवी प्रवृत्ति मार्गनी क्रिया करे तो ते करे, पण तेमांथी पाछो हठे नहीं अने कचवा ने पण करे नहीं, राजी थकी करे अने बीजुं ए लक्षण जे, गमे तेवो पोतामां कोईक स्वभाव होय अने ते कोटि उपाय करे तो पण टले एवो न होय, ने जो ते स्वभावने मुकाव्या नो परमेश्वरनो आग्रह देखे तो ते स्वभाव ने तत्काळ मूके । अने त्रीजुं ए लक्षण जे, पोतामां कांईक अवगुण होय तो पण परमेश्वरनी कथा – कीर्तन अने भगवानना संत ते विना घडीमात्र रहेवाय नहिं. अने पोतानो अवगुण ले ने संत नो अति गुण ग्रहण करे, अने भगवाननी कथा – कीर्तन अने भगवानना संत नो अति महिमा समझे । एवुं जेने वर्तवुं होय तेने परिपक्वनिश्चय जाणवो । एवा निश्चय वाला ने कोई दिवस कोईक प्रारब्धयोगे करीने कांईक वर्तवामां फेर पडी जाय, तोय पण तेनुं अकल्याण न थाय । अने एवो निश्चय न होय ने ते गमे तेवो त्यागी होय तोय पण तेना कल्याण मां फेर छे।

जे भगवानना भक्त ने भगवाननो निश्चय माहात्म्ये सहित जो ते संतनु सत्संगीनुं माहात्म्य घणुं जाणतो होय।

प्रत्यक्ष मूर्ति ने विषे अति दृढ निश्चय थवो जाइए तो सर्व काण करे, कोई अमने साचो थईने मन अर्पे अमे लेश मात्र अंतराय राखे नहीं तो तेमां अमे कोई बातनी कसर रहेवा दइये नहिं । अने जेने भगवान तो निश्चय होय तेना हैयामां तो प्रभुना कल्याण कारी गुण जरुर आवे, अने त्यारे प्रभुना गुण संतमां आवे त्यारे ते साधुनी

लक्षणे युक्त होय ।

जेने अचल निश्चय होय तेने भगवान सारी क्रिया करे अथवा नरसी क्रिया करे ते सर्वे कल्याणकारी भासे अने भगवान जीते अथवा हारे अथवा कोईक टेकाणे बागे अथवा क्यारेक राजी थाय, क्यारेक शोक करे इत्यादिक अनंत प्रकारनी भगवाननी क्रियाओ तेने जोईने निश्चय वाला भक्त होय ते एम कहे जे, प्रभुनी सर्वे क्रिया कल्याणने अर्थे छे । भगवानना निश्चय वालाने कोई रीते भगवानने विषे दोष बुद्धि आवे नहिं । श्रीजी महाराज कहते हैं कि - जेने शास्त्रना वचननो विश्वास होय तेने ज भगवानना स्वरुपनो निश्चय अडग थाय छे अने कल्याण पण तेनुं ज थाय छे अने ते धर्ममांथी कोई काले डगेज नहि । जेने भगवाननो निश्चय माहात्म्य ज्ञाने सहित होय ते भगवानना बन्धनमां पेर पाडे नहि ने जेम कहे तेम करे । जेने भगवाननो ने संत नो माहात्म्य ज्ञाने सहित निश्चय होय तेथी भगवानने अर्थे ने संत ने अर्थे शुं न थाय ? एने अर्थे कुटुंबनो त्याग करे लोक लाज नो त्याग करे, राजनो त्याग करे, सुख नो त्याग करे, धननो त्याग करे, स्त्रीनो त्याग करे, स्त्री होय तो पुरुषनो त्याग करे । जे भगवानना भक्त हो अपमृत्यु ए करीने देह पडे तो पण भगवानना भक्तनी अवली गति थाय नहि । ए तो भगवानना धामने ज पामे । अने भगवान थी विमुख होय तेनो देह सुधी सारी पेठे पडे ने चंदन ना लाकडा मां संस्कारे युक्त बरे तो पण ते तो निश्चय यमपुरीमां जाय अने एवो निश्चय वालो जे होय ते जरुर ब्रह्म होलमां ज पुरो पण बीजे क्यांय कोई धाममां आरो रहे नहीं ।

उत्तम निश्चय वाले की व्याख्या करते समय श्रीजी महाराज कहते हैं कि - अष्टावरणे युक्त एवां जे कोटि कोटि ब्रह्मांड ते जे अक्षर ने विषे अणुं नी पेठे जणाय छे एवुं जे पुरुषोत्तम नारायणनुं धामरुप अक्षर ते रुपे पोते रह्यो थको पुरुषोत्तमनी उपासना करे तेने उत्तम निर्विकल्प निश्चय वाला कहिये ।

जेने देहेनो अनादर होय ने दृढ आत्मनिष्ठा होय ने पंचविषयमां वैराग्य होय अने भगवाननो माहात्म्य सहित यथार्थ निश्चय होय एवा ने सूजे एवुं देशकालादिकनुं विषमणुं थाय तो पण एनी मति अवली थाय नहि । जेने भगवान नो निश्चय होय ते तो एम समजे जे गोलोक, वैकुंठ, श्वेत द्वीप, ब्रह्मपुर ए धामना जे ऐश्वर्य समृद्धि तथा पार्षद, तेणे सहित ए भगवान छे अने एमनी सेरानां करतल तो राधिका, लक्ष्मी आदिक छे, एवा परम भावे सहित भगवानने देखे छे ।

जेम स्त्रीना उदरमां गर्भ होय पछी तेमांथी पुत्र रुप फल उदय थाय छे, तेम जेने भगवानना स्वरुपनो निश्चय रुप गर्भ ज्होय तेने भगवाननुं जे अक्षरधाम ते रुप फल प्राप्ति थाय छे ? माटे एवो उपाय करवो जेणे करीने ए गर्भने विध्न न थाय । वचनामृत में श्रीजी महाराजने निश्चय के विषय में बहुत कुछ कहा है । जिसमें से थोड़ा ही लिखना संभव हो सका । विस्तार के भय से अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण को ही भगवान समझना । जिस तरह उस समय के नंद-संतो में तथा हरिभक्तों में सर्व अवतार के अवतारी भगवान स्वामिनारायण में सभी को प्रीति थी अतिशय दृढता थी उसी तरह आज से सभी लोग जो भगवान स्वामिनारायण के आश्रित है आत्म समर्पित भाव से एकनिष्ठ होकर उन्ही को अपना इष्ट माने । दूसरी वात यह भी कि भगवान स्वामिनारायण ने उपासना की शुद्धि को ध्यान में रखकर अपने ही स्वरुप को श्री नरनारायणादि देवों को प्रतिष्ठित किया है । इसके साथ ही दीक्षा की सुगमता के लिये अपनी जगह परम धर्मदेव के कुल में से त्यागी - गृही के गुरु पद पर धर्मवंशी आचार्य की स्थापना किये । इस वात को जो मानते हैं, अनुशरण करते हैं वेही श्रीहरि को पहचान सके हैं ।

प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का श्रीराजा के साथ ओस्ट्रेलीया धर्मप्रवास (२०१७)

– शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर)

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से विश्वभर में भगवान स्वामिनारायण का संदेश फैल रहा है। इसी तरह ओस्ट्रेलिया खंडमें भी करीब १२ वर्ष में भव्य ५ मंदिरों का निर्माण हुआ है। वहाँ पर रहने वाले सत्संगियों में धर्म का पोषण हो इसके लिये प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू. गादीवालाश्री, तथा पू. श्रीराजा, संत-सां.यो. बहनों तथा पार्षदों के साथ ओस्ट्रेलीया के प्रवास पर पधारे थे।

मेलबोर्न **NNDYM CAMP** तथा सत्संग सभा – मेलबोर्न में पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में ओस्ट्रेलीया खंड में प्रथमवार लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस केम्प में ओस्ट्रेलीया के प्रत्येक मंदिरों से ३०० जितने युवान-युवती आये थे। मात्र ओस्ट्रेलीया में हीं नही अपितु न्युजीलेन्ड तथा यु.के. से भी युवान आये थे। ३ दिन तक जंगल के प्राकृतिक सौंदर्य के बीच में सभी ने पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में उत्तम ज्ञान प्राप्त किया था। बहनें भी प.पू. गादीवालाश्री के तथा पू. श्रीराजा के सानिध्य में सत्संग का लाभ ली थी।

केम्प के बाद अपने मंदिर में सुंदर सभा का भी आयोजन किया गया था। अपने मंदिर से २ घंटे दूर साउथ मेलबोक में नूतन मंदिर के निर्माण की घोषणा से सभी में आनंद की लहर फैल गई थी। मंदिर का निर्माण शीघ्र हो तथा उसमें सभी लोग तन, मन, धन से सहयोग करें ऐसी आज्ञा लालजी महारजाश्री ने की थी।

पर्थ तथा एडीलेड (१० से १४ अप्रैल) इन दोनों शहरों में धर्मकुल तथा संत २-२ दिन रुककर विशेष प्रकार का सत्संग प्रचार किया। इसमें सभी लोग सहयोग की भावना रखें जिससे सत्संग का विकास हो ऐसी भावना व्यक्त किये थे। सभी के घरों में पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. गादीवालाजी पदार्पण की थी। तथा सभी की भावनाओं को समझी थीं।

सीडनी (१२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव) १४ से १६ अप्रैल – सीडनी में ब्लेक टाउन मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ३ दिन की कथा का आयोजन किया गया था। जिस में २ घंटे तक प.पू. गादीवालाजीने अपनी उपस्थिति में बहनों के परिश्रम की प्रशंसा की थी।

पाटोत्सव के प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्रीने भी अभिषेक आदि करके तथा दर्शन का लाभ देकर सभी को आनंदित किया था।

सीडनी में कींग्स पार्क मंदिर में भी सुंदर सत्संग सभा का आयोनज किया गया था। सम्पूर्ण आत्मशक्ति मिली थी। पू. गादीवालाजी तथा पू. श्रीराजा ने भी बहनों को धार्मिक पोषण प्रदान किया था।

इस प्रवास में शा.स्वा. रामकृष्णदासजी, शा. नारायणमुनिदासजी, पार्षद वनराज भगत, सां.यो. मंजुबा तथा भारतीबा भी सेवा में साथ थी।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

पंखा

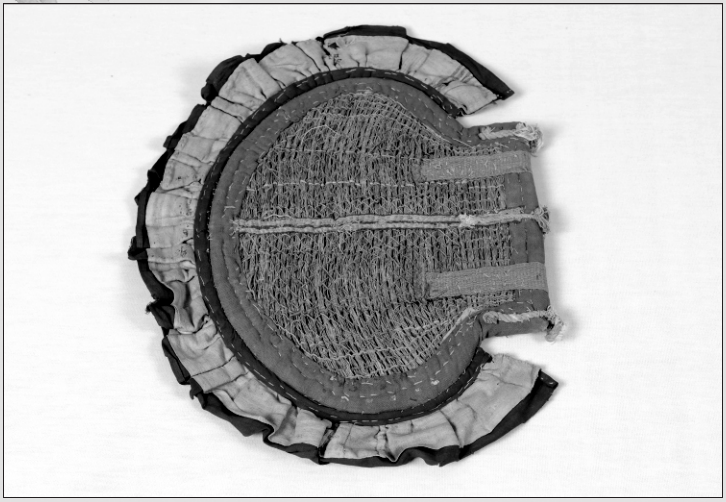

सूर्य-चंद्र-अग्नि-वायु आदिक देवगण भी जिनकी आज्ञा में रहते हैं ऐसे सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने सं. १८३७ चैत्र शुक्ल-९ को सर्वजीव हितावह के लिए मनुष्यदेह को धारण किये और हम सभी के लिये अनेकों प्रकार के दुःख का सहन किये।

उस समय में भी आज की तरह प्रखर गर्मी पडती थी। गर्मी की दुपहरी में भी भगवान श्रीहरि अपने संतो के साथ समाज के उद्धार के लिये विचरण करते रहते थे। आज कीतरह एअरकन्डीशनर, एलिक्ट्रिक पंखा, एरकूलर इत्यादि ठंढक के साधन नहीं थे।

प्राकृतिक वातावरण में वृक्षों के नीचे छाया में या हरिभक्तों के घर जब श्रीहरि रुकते तब मूलजी ब्रह्मचारी हाथ में पंखा लेकर प्रभु के ऊपर डुलाने लगते प्रभु की सेवा में सदा तत्पर रहते थे। जिस पंखा से मूलजी ब्रह्मचारी श्रीहरि को ठन्ढक पहुंचाते उस पंखे का दर्शन करने अपने हृदय में ठन्ढक मिलती है। वही पंखा यहाँ के श्री स्वामिनारायण म्युजियम में विद्यमान है। मूलजी ब्रह्मचारी जैसे ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी का तथा श्रीहरि का अचूक स्मरण होजाय, अखंड सेवा भावना का स्मरण हो आवे, ऐसा वह पंखा इस म्युजियम में अद्यतन सुविधाओं से सुसज्ज रखा गया है।

पंखा के दर्शन मात्र से श्रीहरि की अखंड सेवा कैसे हो यह स्मरण हो आता है। प्रखर गर्मी में भी श्रीहरि तथा श्रीहरि के संत-भक्त समाज के कल्याण के लिये कितना विचरण किये होंगे इसकी झांकी यहाँ देखने को मिलती है। किसी प्रकार की भौतिक सुविधा के विना भी भगवान की प्राप्ति कैसे हो इसका उपदेश अपने आप मिल जाता है।

इस पंखा को श्रीहरि के हस्तकमल का तथा मूलजी ब्रह्मचारी का एवं सेवा में रहने वाले अनेकों नंद संतो का स्पर्श हुआ है।

हम भी इस पंखे का दर्शन-स्पर्श-स्मरण करके त्रिविधताप से निःसंदेह मुक्त होकर श्रीहरि की अनुभूति को प्राप्त करेंगे। सभी हरिभक्त इस गर्मी में इस पंखे का अचूक दर्शन करें, इससे आपकी आत्मा को ठन्ढक मिलेगी।

यह पंखा होल नं. १ में रखा गया है।

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-अप्रैल-१७

रु।.५३,४००/-	नारण प्रेमजी मेघजी परिवार - बलदिया-कच्छ
रु।.५१,०००/-	दिनेशभाई आर. पटेल - वस्त्रापुर
रु।.२१,०००/-	मोरी कमाभाई दानाभाई परिवार - कालीयाणा
रु।.२१,०००/-	निलय शाह - अमदावाद
रु।.११,०००/-	डॉ. वसंत वालु - सरदार पटेल बावला - नारणपुरा
रु।.५,६२०/-	छत्राजी गजाजी रबारी - आरपुरा (राज.)
रु।.५,०००/-	कमलेशभाई एच. शाह - उस्मानपुरा
रु।.५,००१/-	वनराजभाई भीमाभाई पढारीया - संकल्प पुरा होने पर कृते रमेशभाई पढारिया - गुंदीयाला
रु।.५,०००/-	मीनाबहन के. जोषी - बोपल
रु।.५,०००/-	लक्ष्मणभाई जे. चावडा अ.नि. चावडा अरजणभाई तथा रामबा के स्मरणार्थ - कृते गीताबहन तथा जिग्ने (स्वा. बाग) मेमनगर।
रु।.५,०००/-	रीटाबहन तथा हसमुखभाई वोरा - बोस्टन
रु।.५,०००/-	रीटाबहन तथा हसमुखभाई कालीदास वोरा - बोस्टन

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि - अप्रैल-१७

ता. ०१-०४-२०१७	अवनीश वालजीभाई पटेल - लंडन
ता. ०२-०४-२०१७	दिनेशभाई रावजीभाई पटेल - मणीनगर (बोस्टन)
ता. ०५-०४-२०१७	(प्रातः) मावजी शिवजी पिंडोरिया तथा धीरेश कांतिलाल हालाई (कच्छ)
	(दोपहर) बलदेवभाई मणीलाल पटेल - बायरन
ता. ११-०४-२०१७	डॉ. नरेन्द्रभाई डी. भावसार प.पू. बड़े महाराजश्री के जन्मोत्सव के निमित्त - महेसाणा।
ता. १४-०४-२०१७	मधुबहन भीमाभाई पटेल - कृते प्रियंकाबहन दिलीपभाई, देव तथा आयुष - डांगरवावाला (एलनटाउन)
ता. १५-०४-२०१७	रीटाबहन हसमुखभाई कालीदास वोरा (बोस्टन)
ता. १६-०४-२०१७	(प्रातः) हर्षाबहन इन्द्रवदनभाई पटेल - नारणपुरा
	(दोपहर) अश्विनभाई तथा भरतभाई जागाणी कृते डॉ. मगनभाई जागाणी - आंबावाणी
ता. २०-०४-२०१७	क्रिष्णा मुकेशभाई पटेल - कृते बलदेवभाई पटेल - साल्वी-जसी डांगरवावाला (एलनटाउन)
ता. २१-०४-२०१७	बलदेवभाई मणीलाल पटेल - बायरन
ता. ३०-०४-२०१७	रसिकभाई बबलदास गज्जर (जगदीश ओफसेट) - नारणपुरा

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।
म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६
www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

वात है ब्रेक की

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

जेतलपुर में स्वामिनारायण भगवान स्वयं बड़े-बड़े यज्ञ करवा रहे थे। पोष शुक्ल एकादशी का दिन था। संतो ने महाराज से विन्ती किया कि आपका पूजन करना है। स्वामिनारायण भगवानने कहा कि अच्छा, आप सभी हमारा पूजन करो । इसके लिये विशाल सभा का आयोजन किया गया । बाद में एक-एक संत महाराज कापूजन करने के लिये आने लगे। इस तरह पांचसौ संत महाराज का पूजन किये।

इसमें सबसे पहले नाम आता है स्वामी रामदासभाई का भक्तचिंतामणी में निष्कुलानंद स्वामीने सभी संतो का जहाँ नाम लिखा है उसमें सबसे पहले रामदासभाई का नाम लिखा है, रामदासभाई सबसे पुराने संत थे। इतना ही नहीं, महाराज ने उन्हें एक विशिष्ट स्थान भी दिया था। उनका नाम स्वामी रामदासजी तो था ही लेकिन श्रीजी महाराजने भरी सभा में निश्चित किया कि स्वामी रामदासजी संत तो हैं ही साथ में मेरे बड़े भाई भी हैं। जो संत अपने मा-बाप-भाई परिवार सभी को छोड़कर आये हैं उनके नाम के अन्त में भाई लगाया जाय । श्रीजी महाराजने स्पष्ट किया कि हम रामदासजी को इसलिये भाई बनाते हैं कि रामदासबाई स्पष्ट वक्ता हैं। सत्य कहने वाला ही संत होता है इसके साथ ही ये निष्पाप हैं। जैसे अन्दर वैसे बाहर।

मनस्येकम् वचस्येकं कर्मण्येकम् महात्मनाम्।

जो सच्चे महात्मा हैं । मन-वचन-कर्म इसमें सहभागिता है। जहाँ कमी हो उसे कहने वाला एक संत तो चाहिये। इसलिये इन्हे भाई बनाये हैं।

रामदासभाई को श्रीजी महाराज कहते हैं कि आज से आप हमारे भाई, जब-जहाँ ऐसा लगे कि हम भूल कर रहे हैं वहाँ आप अवश्य हमें कहेंगे। इसलिये श्रीजी महाराज ने रामदासजी को भाई बनाये। उसी समय से सत्संग में रामदासभाईके रुप में प्रकाशित हुए । इस आचरण से महाराजने हम सभी को उपदेश दिया है।

सत्संग में समाज में, कुटुम्ब में भले आप बड़े हों तो भी किसी एक के साथ आत्मीयभाव तो रखना ही चाहिये । जिससे वह आपकी गल्ती पर कह सके । यह आप क्या कर रहे हैं। तुम्हें यह शोभा देता है क्या ? सभी आपके प्रशंसक हों लेकिन कोई एक ऐसा भी हो जो आपके दोषो को कह सके। सभी यदि प्रशंसक ही रहेंगे, तो निश्चित है वहाँ हानि होगी। आप वाहन के विषय में जानते होंगे - स्कूटर, गाडी, रेल, बस, ट्रक, विमान या स्टीमर इन सभी का कंट्रोल ड्राईवर के पास रहता है। सभी कंट्रोलर में मुख्य ब्रेक होता है। ब्रेक न हो तो साधन खतरे से खाली नहीं कहा जायेगा। ब्रेक से गाडी कंट्रोल में होती है। मनुष्य का ब्रेक क्या है। मनुष्य में ब्रेक की बहुत जरुरत होती है। वाहन से भी अधिक मनुष्य में ब्रेक की जरुरत है।

जिस से अधिक प्रेम हो, भाव हो, समर्पण का भाव हो, वहीं पर ब्रेक भी होता है। वही हमें कह सकता है। सत्संग में या समाज में सुखी होना हो तो यह भाव किसी एक के साथ रखना ही चाहिए । गोपाालनंद स्वामी अपनी बात में समझाते हुये कहते हैं कि "इस सत्संग में जिन्हे रोकने वाला कोई नहीं हो तो उससे बड़ा कोई अभागा नहीं है। स्वामिनारायण भगवानने अपने आचरण से सिखाया कि सत्संग में किसी एक के साथ अपना मन ऐसा बांधकर रखना कि वह अपने को कह सके, रोक सके। यह प्रेरणा देने के लिये श्रीजी महाराज रामदासभाई को अपना भाई बनाये।

मित्रों ! यह कितनी अच्छी बात है न ? तो आप लोग भी अपने जीवन में किसी को अपना आत्मीयजन अवश्य बनाकर रखना, जो आपकी भूल को सुधार

सके । चाहे वह मम्मी-हो या पापा हो, गुरु हो किसी को अपना दोष कहने वाला बनाना ही चाहिये । तभी सत्संग में समाज में आपकी प्रगति अखंड होती रहेगी ।

•

भगवान भक्त की रक्षा करते हैं

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

भगत तथा जगत की वात न्यारी है । भगवान का भक्त निरंतर संसार के व्यवहार को समझकर भगवान की भजन में मन पिरोये रखता है । सुख या दुःख दोनो परिस्थितियों में भगवान का सतत अनुसंधान रखकर प्रभु की भक्ति का बल रखता है । जब कि जगत का जीव सुख की चाहना में संसार सागर में आनद से जीता है । सगे संबंधी, व्यवहार, मान, सुख-वैभव, भोग-विलास में जीवन पसार करता है । लेकिन इस बात में उसे यह ख्याल नहीं रहता कि काल अपनी तरफ देख रहा है । भले यह करने वाले कि हम आनंद से जीते हैं लेकिन कोई विचित्र शक्ति कोई अगम्य दुःख आंख खोल कर देख रही है इसका उसे भान भी नहीं रहता है, सुख कब दुःख में परिवर्तित हो जायेगा इसका संसारीजीव को खबर भी नहीं रहती है । लेकिन यह सत्य है कि संसार में भगवान, सत्संग, संत समागम के सिवाय और कोई सुखदायी नहीं है।

सुरपुर, नरपुर, नागपुर ये तीन में सुख नाही ।
सुख है हरि के चरण में, का संतन के मांही ॥

यह वात की समझ श्रीमद् भागवत के अष्टम स्कन्धमें गजेन्द्र मोक्ष की कथा से आयेगी । गजेन्द्र नाम का एक हाथी था । वह अपने कुटुम्ब के साथ सुख से जीता था । त्रिकूट नाम के पर्वत की तलहटी में एक बहुत बड़ा जलाशय था । उस में वह अपने परिवार के साथ जल विहार करने गया । वह अपने मन में विचार कर रहा था कि हमारा कुटुम्ब कितना सुखी है । मेरी पत्नी मेरा पुत्र सभी वफादार है।सुख-दुःख में सभी साथ रहते हैं।

एक दिन की वात है कि – वह गजेन्द्र हाथी अपने परिवार के साथ उस सरोवर में प्रवेश किया । गजेन्द्र अपनी सूंड में पानी भरकर अपनी पत्नी तथा बच्चों के ऊपर फेंकता, सभी उसके ऊपर फेंकते इस तरह वह जल विहार करने लगा । उसी समय एक विशाल मगर उस गजेन्द्र का पग पकड़ लिया । मगर का बल पानी में अधिक होता है । सुख के समय में घड़ी तेज गति से चलती है लेकिन जब दुःख आता है तो घड़ी की गति धीमी हो जाती है । गजेन्द्र की ताकात तो बहुत थी खूब युद्ध किया । पूरी ताकात का प्रयोग करने पर भी सफलता नहीं मिली ।

हाथी को इस द्वन्द्वात्मक स्थिति में देखकर उसके आत्मीयजन (परिवारजन) उसी स्थिति में छोडकर जल के बाहर निकल गये और आत्म रक्षा की सोच से वहाँ सो चले गये । इसी तरह संसार में जब दुःख आता है तब कोई सहायक नहीं होता मात्र ईश्वर को छोड़कर ।

सुख जब आता है तब सभी लोग कहते हैं कि कोई काम हो तो कहियेगा । चिंता मत करियेगा । जरुरत पड़ने पर आधी रात में आपके साथ रहेंगे । जब दुःख आता है तब दोपहर में भी कोई सहायक नहीं होता । यही संसार है । मात्र मुख से कहकर संतोष देने वालों की संख्या अधिक होती है । जो बड़े नजदीक के होते हैं वे भी छो़कर दूर हो जाते हैं । यह विचार गजेन्द्र को भी आया कि जो अपने थे वे तो छोड़कर चले गये, अब मैं क्या करुँ ? अब मात्र एक ही आशा है जो परमात्मा ही बचा सकता है । इस दुःख की घड़ी में गजेन्द्र परमात्मा की याद करता है, हे ईश्वर ! हे परमात्मा ! हे दयालु ! अब मेरी सभी इन्द्रियां शिथिल हो गई है, अब मैं बल हीन हो गया हूँ, इस परिस्थिति में मेरे परिवारजन भी छोड़कर चले गये हैं, अब मात्र आप ही सहायक है, आप हमारी रक्षा करें ?

अगल बगल देखने लगा कि कोई ऐसी वस्तु हो जो प्रभु को अर्पण कर सकूं । इस अवस्था में मैं क्या दे सकता हूँ । पहले से ऐसा कुछ ख्याल होता तो फल-फूल कुछी भी लाकर अर्पण करता उस समय ग्राह गज को बीच में खींचे जा रहा था उसी समय उसकी दृष्टि कमलपुष्प पर पड़ी, अपनी सूंड से उस पुष्प को उखाड कर परमात्मा की स्तुति करने लगा ।

पेईज नं. २१

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "सभी शास्त्रों का निचोड़ एक है कि संसार से वीतराग होना"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

अपनी जो ईन्द्रियां है वे सभी अपना अपना ही कार्य कर सकती है। जैसे-नाक से सूंघने का कार्य होता है। कान से सुनने का कार्य होता है। आंख से देखने का कार्य होता है। विज्ञान चाहे जितना भी आगे निकल जाय लेकिन कान से देखने का तथा आँख से सुनने का कार्य कभी नहीं कर सकेगा। कोई भी ईन्द्रिय किसी अन्य इन्द्रिय का कार्य नहीं कर सकेगी। लेकिन मन एक मात्र ऐसा है जो सभी इन्द्रियों को साथ लेकर चलता है। कैसे १ तो जब हम रात्रि में सोते रहते हैं और स्वप्न आता है तब कोई भी ईन्द्रिय कार्य में नही रहती। सभी इन्द्रिया सुषुप्त अवस्था मे ही रहती है। फिर भी स्वप्न दिखाई देता है। स्वप्न अवस्था में जो भी कार्य करते है वह क्रिया शील होता है। सभी अनुभव जो जाग्रत अवस्था में होता है, वह स्वप्नावस्था में भी होता है। खराब स्वप्न तो और भी सच्चा लगता है। खराब स्वप्न में हृदय की गति बढ जाती है। इसका यही प्रमाण है कि मन सभी ईन्द्रियो को साथ लेकर चलता है। हम इस समय यहाँ कथा में बैटे हैं, लेकिन ध्यान कहीं अन्यत्र हो तो कुछ भी समझ में नही आयेगा। याद भी नहीं रहेगा। इस का तात्पर्य यह कि अपना चित्त जहाँ होगा वही सभी ईन्द्रियां जायेंगी।

एक जगह पर रथयात्रा निकल रही थी, एक भाई को रथयात्रा में आना था लेकिन वह लेट हो गया। दुकानदार से पूछा कि रथयात्रा निकले कितना समय हुआ। उस दुकानदारने कहा कि यहाँ से रथयात्रा निकली हीनहीं। सत्य तो यह कि वह दुकानदार अपनी दुकान में इतना मशगुल था कि रथयात्रा कब निकली उसे ख्याल ही नहीं रहा। इसका मतलब यह हुआ कि मन के विना कुछ होता नहीं है। जो भी कार्य इन्द्रियां करती हैं, उसमें मन प्रधान होता है। हम प्रतिदिन रसोई बनाते हैं लेकिन किसी न किसी दिन दाल-शाक में नमक गम-वेसी हो जाता है। इसमें मन ही कारण है। इसलिये मन से जो कार्य किया जाय वही सच्चा होता है। हाथ में माला हो और मन कहीं अन्यत्र फिरता हो तो माला फेरने का फल नहीं मिले। किसी कार्य को करते समय मन लगाकर किया जाय तो सफलता अवश्य मिलेगी। तन्मय होकर कार्य किया जाय तो बन्धन नहीं होगा। उदासीन - राग द्वेष रहित होकर कार्य किया जाय तो बंधन नहीं होगा। उदासीन रहकर कैसे कार्य किया जाय ? यह अभ्यास से संभव है ? पूर्व के समय जो ऋषि-मुनि थे इसी मन से मोक्ष तत्व को प्राप्त किये थे। वे सभी एकचित्त के अभ्यास से बन्धन विनिर्मुक्त होकर मोक्ष के अधिकारी बने। सामान्य उदाहरण देंखे जैसे - प्रारंभ में जब साइकल चलाना सीखते है तब कितनी डर लगती है। पैंडल परध्यान रखना, हाथ का बेलेन्स बनाना, पैर-आंख-मन सभी के केन्द्रित करने पर ही गिरते नहीं है। बाद में तो रोड पर कितनी भी भींड हो फिर भी धडल्ले से चलाते हैं। यह अभ्यास से संभव है। सभी शास्त्रों का निचोड यहीहै कि समभाव में रहना है। जो भी कार्य करें राग-द्वेष से रहित हो कर करें किसी के आने पर प्रसन्न होना तथा किसी के आने पर दुःखी होना यह नहीं होना चाहिए। राग-द्वेष का कारण मन है। संसार के लिए उदासीन रहना है तथा भगवान के लिये नहीं भगवान के लिय तो संसार से उदासीन रहकर भजन भक्ति में अभ्यास करते रहना चाहिए। सब ज्ञान होते हुए भी विचार शक्ति की कमी के कारण मोह बंधन में

डाल देता है । अनेकों जन्मों से संसार के आवागमन वाले व्यवहार में यह जीव फंसा हुआ है । संसार में आसक्त व्यक्ति के जीवन में जब विपरीत परिस्थिति आती है तभी वैराग्य आता है । बड़े भाग्यशाली होते हैं जो भगवान में आसक्त होते है । मायिक पदार्थ में फंसने के कारण दीव्यता नहीं आती । पहले अन्तःकरण को दीव्य बनाना पडेगा । अन्तःकरण को शुद्ध रखना पडेगा । जिस तरह दो सखी हो और समान हो तथा समान स्वभाव हो, इन दोनो को पूरे गाँव की पंचाहन करनी हो तो वड़ी सरलता से समभाव के साथ कर सकती है । जगत में रहकर अपने स्वभाव को किसी को छोड़ना नहीं है । अभ्यास के विना कुछ संभव नहीं है । अभ्यास के लिये सत्संग करते रहना पडेगा । सदा यह विचारते रहना चाहिये कि मोक्ष मार्ग में क्या बाधक है । अपने मन को भगवान के साथ जोड़े रहने से मोक्ष मार्ग में बाधा नहीं आयेगी । सत्संग करते रहने से भी बाधानहीं आयेगी । शरीर का संबन्धभले संसार के साथ हो लेकिन मन तो भजन-भक्ति-भगवान में हो तो बन्धन नहीं होगा । वीत राग होकर संसार में रहना चाहिए ।

•

सेवकराम

– सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

सेवकराम कितना अच्छा नाम है । सेवा करे वह सेवक नाम के पीछे जैसे भाई, कुमार, लाल लिखा जाता है । वैसे यहाँ राम लिखा गया है अर्थात् राम का सेवक ऐसा भी अर्थ हो सकता है ।

परंतु सेवकराम शब्द वांचकर स्वामिनारायण संप्रदाय में भगवान स्वामिनारायण ने गढडा के प्रथम प्रकरण के १० वें वचनामृत में जिस सेवकराम की वात की है उसका स्मरण हो आता है ।

वचनामृत में श्रीहरिने बहुत सारे प्रसंग अपने स्वभाव की, स्वयं के अंग की, अच्छे लगे या न लगे उन सभी की वात की है, अपने वन विचरण के किसी प्रसंग की वात नहीं की । मात्र सेवकराम की की है । महाराजने वचनामृत का प्रारंभ ही ऐसे किया है कि ''अमे वेंकडाद्रिथी सेतु बंधरामेस्वर जता हता त्यां एक सेवकराम नामे साधु हतो । ते तिरुपति बालाजी थी रामेश्वर तरफ जतां मांदो पड्यो । तेने लोही कंड बेसणुं थयेलुं एटले के लोही वाशना झाडा थतां हता । अने खूब रिबातो हतो । श्रीहरिका खूब दयालु स्वभाव था ।

''स्वभाव छे स्वामीनो पर दुःख हारी रे''
देखी नखमाय दया आणी रे, अति आकला थाय अन्न
धन वस्त्र रे ।''

श्रीजी महाराज को रुकना नही था तो भी साधु को दुःखी देखर दया आ गई और वहाँ पर रुक कर उसकी सेवा करने लगे । उसे नहवाते - धोवाते । अगल बगल से मांगकर लाकर भोजन कराते । उसके पास सोना मुहर थी उस में से महाराज को देकर भोजन की सामग्री मंगवाता और महाराज उसे भोजन बनाकर करवाते बाद में स्वयं के लिये भिक्षा मांग कर लाकर खाते । महाराज को इसका क्याल आ गया कि यह साधु लोभी है, कृतघ्नी है मुझे कुछ नहीं देता अपने लिये सब कुछ मंगवाकर खाता है । यह जानकर भी महाराज उसे छोडकर नही गये - जब तक वह ठीक नहीं हुआ । दो महीने ठीक होने में लगे । महाराज की कितनी ऊँची भावना थी ।

सेवकराम साधु के वेश में था । घरबार छोडकर साधु बना था । वह सच्चा मार्ग भूला हुआ था । साधु होते हुये भी एक मन की सामान तथा सोना मुहर साथ में रखने की क्या जरुरत । श्रीजी महाराज इस दृष्टांत से साधु-असाधु का भेद समझाते हैं । इसलिये सच्चे साधु का संग ही करना चाहिए । सेवकराम में थोडा भी साधुता का गुण होता तो साक्षात् पुरुषोत्तम नारायण के मिलने पर परिवर्तन तो आना चाहिए था । कोई व्यक्ति उपकार किया हो तो उसके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिए कृतघ्नी नहीं होना चाहिए . आज की ऐसी स्थिति हो गई है कि सभी जगह पर कृतघ्नी ही

मिलते हैं। लेकिन महाराजने ऐसे कृतध्नी का संग न करने की बात की है।

कृष्ण यजुर्वेद के गभेपि निषद् में लिखा है कि जीव जब माता के गर्भ में आता है तब वह माता के गर्भ में उल्टा ही रहता है, अतिशय पीडा भोगता है। उस समय उसे १०० जन्म का ज्ञान होता है। उसे पूर्व जन्म के प्रसं गका स्मरण होता है। ऐसी पीडा में से मुक्त होने के लिये भगवान से प्रार्थना करता है। हमें इस पीडा से मुक्त कीजिए। भगवान कृपा करके उस जीव को जन्म देते हैं। अब उस जीव का जन्म भगवान की कृपा से हुआ लेकिन भगवान के प्रति उसका कोई भाव नहीं रहता और पैदा होते ही वह रोने लगता है - क्यां क्यां करने लगता है। भगवान तो जहाँ है वहीं है। तूं यहाँ है। भगवान को भूल जाता है। इस तरह जीव भी कितना कृतघ्नी है।

भगवानने भक्तों के ऊपर दया करके गर्भवास में से बाहर किया, वह इस लिये कि जीव भगवान की भजन भक्ति करके इस भवसागर से पार हो जाय। लेकिन ऐसा नहीं होता वह जीव इस भवसागर में आकर और ही फंसता जाता है।

भगवानने करुणा करके मनुष्य की शरीर दी। जन्म से पहले माता के स्तन में दूधबना दिये। बालक को दांत नहीं थे इसलिये दूधबनाये . जो अपेक्षा होती है वह भगावन पूरा किये लेकिन जब थोडा सा ज्ञान हुआ तो संसार के चक्र में उत्तरोत्तर फंसता चला जाता है। भगवान के उपकार को कभी भूलना नहीं चाहिए।

श्रीजी महाराजने वचनामृत में कृतघ्नी के संग का त्याग करने की बात की है। मानवजीवन में कभी कृतघ्नी का भाव नहीं आना चाहिए। मनुष्य जन्म का हेतु है सावधान होकर संसार के व्यवहार को जानते हुये भगवत्परायण होकर भगवान की भजन भक्ति करे तथा कभी किसी के प्रति कृतघ्नी भाव न रखे। जो हो वह सत्य हो।

संवत् १८७६ के मार्गशीर्ष शुक्ल-१३ को यह वात कहकर शिक्षापत्री में भी २६ वें श्लोक में किसका संग करना चाहिए किस का नहीं करना चाहिए, ऐसा निर्देश देकर कृतघ्नी का संग कभी भी नहीं करने का निर्देश दिये हैं।

●

सेवा तथा समर्पण

– पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल, ता. कडी)

अपनी शरीर से दूसरों की सेवा हो तो शरीर पवित्र होता है। अपना धन दूसरों के लिये उपयोग में आवे तो धन पवित्र होता है। इसी तरह हम भगवान की भजन करेंतो अपना मन पवित्र होता है। भोजन में भक्ति भरी जाय तो भोजन प्रसाद हो जाता है। निराहार में भक्ति भरी जाय तो उपवास बन जाता है। घर में भक्ति भरी जाय तो घर मंदिर हो जाता है। श्रम में भक्ति हो तो श्रम सेवा हो जाता है।

जब रावण सीताजी को लंका में उठा ले गया तब वहाँ पहुंचनेके लिये भगवान रामचंद्रजी बानरों के साथ समुद्र के उपर पुल बना दिये। उस पुल के निर्माण कार्य में सेवा करने वाले नल-नील मुख्य थे । सभी अपनी शक्ति के अनुसार भक्ति करते थे। इस सेवा यज्ञमें एक गिलहरी भी थी। वह रेती में लोटती बाद में समुद्र में झार आती इस तरह वह बार बार करती, यह कार्य तब तक चला जब तक पुल निर्माण नहीं हुआ। इस कार्य को देखकर पूछा गया कि तूं ऐसा क्यों करती है। तब उसने कहा कि यह जो समुद्र के उपर पुल बांधा जा रहा है उसमें मैं सेवा कर रही हूँ। मैं भले बड़े-बड़े पत्थर न ला सकूं तो भी जो मुझसे होता है उतना तो करुं। कहा जाता है कि रामचन्द्र भगवान को जब इस वात की खबर पड़ीतो भगवान उसके ऊपर प्रसन्न होकर अपना हाथ फेरे उसी समय से गिलहरी के पीठ पर लकीर पड़ गयी जो आज भी दिखाई देती है। गिलहरी का पुल बांघने में काम साधारण था लेकिन सेवा का कार्य असाधारण था। इसी तरह हमें भी जितनी सेवा हो सके करनी चाहिए।

स्वामिनारायण संप्रदाय में सेवा के ऊपर खूब बल दिया जाता है । पूरी सृष्टि में सेवा, समर्पण, सदाचार का बीज बोने वाले श्री स्वामिनारयण भगवान गढपुर में दादा खाचर के दरबार में भव्य शिखरी मंदिर का निर्माण करवाये । गाँव-गाँव से संत-हरिभक्त मंदिर की सेवा करने के लिये उमड पडे । श्री स्वामिनारायण भगवान दादा खाचर के दरबार में नींब वृक्ष के नीचे भक्तों के बीच में विराजमान हैं । प्रेमी भक्त इस अवसर पर शारीरिक - मानसिक - आर्थिक सेवा करने के लिये तत्पर है।

श्रीजी महाराज सभी को आत्मीयभाव से देख रहे हैं । उसी समय वहाँ एक भक्त अत्यन्त गरीब है प्रभुके पास आकर कहने लगा कि हे प्रभु ! हमें भी मंदिर की सेवा का लाभ दीजिए । श्रीजी महाराज हंसते हुए बोले दुबली भट्ट आपकी भावना अच्छी है, लेकिन आप कैसी सेवा करना चाहते हैं । दुबली भट्ट ने कहा कि मेरे पास जो भी है वह सब कुछ आपको अर्पण करना चाहता हूँ । ऐसा कहकर अपने मस्तक से पगड़ी उतारे उसमें से १२ पैसे निकाले । जिसे दुबली भट्टने बड़ी प्रसन्नता के साथ महाराज के चरण पर भेंट कर दिये । और कहने लगे कि प्रभु यह हमारे जीवन में एकत्रित की गई पूंजी है जो आपके चरण में अर्पित कर रहा हूँ । सभा में सन्नाटा छा गया । प्रभु ने कहा कि दुबली भट्ट, आपकी पगड़ी फट गई है, इस पैसे में से नई लाईयेगा । आपकी सेवा मुझे मिल गई । दुबली भट्टने कहा प्रभु सबकुछ समाप्त हो गया है, इस लिये आप मेरी इस सेवा को स्वीकार कर लीजिये ।

प्रभु अपने आसन से खड़े हो गये और दुबली भट्ट के १२ पैसे लेकर उन्हें अपने गले लगा लिये । सभी के सामने कहने लेग कि ''अब हमारे मंदिर का कार्य पूर्ण हो जायेगा ।'' ''भक्तजन १२ पैसा कोई बड़ी चीज नहीं है, लेकिन उनकी समर्पण की भावना उत्तम है । जिसके पास कुछ भी नहीं है वह सर्वस्व समर्पण की भावना रखता है इसलिये यह १२ पैसा समग्र सृष्टि की सम्पति से अधिक है । इसी तरह हम भी भगवान स्वामिनारायण को प्रसन्न करने के लिये उन्हीं की आज्ञा में रहकर प्रसन्न रहकर सेवा करते रहेंगे तो प्रभु की प्रसन्नता के अधिकारी बनेंगे । उनकी कृपा निरन्तर बरसती रहेगी । भगवान की कृपा निरन्तर अपने ऊपर रहे इससे अधिक और क्या चाहिए ।

अनु. पेईज नं. १७ से आगे

जब भक्त आर्तनाद या एक निष्ठा से परमात्मा की स्तुति करता है तब प्रभु उसी समय प्रगट होते हैं, गज की स्तुति पर प्रभु एक क्षण विना विलम्ब के वहाँ उपस्थित होते हैं।

गरुण तजीने पाला पधार्या, गज सारु महाराज ।

हरि स्वरुपे पधारी प्रभु ए गज को मगर के मुख से मुक्त किये । गजेन्द्र को मूल स्वरुप की प्राप्ति हुई । वह अपने लोक में चला गया ।

मित्रों ! गजेन्द्र मोक्ष की जो यह कथा है वह जो संसार में रचे पचे रहते हैं । सगे सम्बन्धी में ही अपना समय विता देते हैं । उसी को सर्वस्व मानने वाले संसारी जीवों के लिये यह उपदेश जैसा है । अपनी फर्ज का पालन करना चाहिये, लेकिन एक वात का सदा ध्यान रखना चाहिए की परमात्मा तथा सत्संग को छोडकर कोई हितकारी नहीं है । यदि जीवात्मा इस वात का अनुसन्धान रखे तो परमात्मा की भजन करते रहने से जीवात्मा का बेडा पार हो जायेगा ।

स्वामिनारायण भगवान ने हम सभी के ऊपर कृपा कर के - देव, आचार्य, संत, सत्शास्त्र की शर में रहने की आज्ञा की है । जिससे विपत्ति में फंसते नहीं है । कारण यह की सदा प्रगट तथा सदा प्रत्यक्ष श्रीहरि अपने भक्तों की रक्षा करने के लिये तत्पर रहते हैं ।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में रामनवमी श्रीहरि प्राकट्योत्सव

परम कृपालु पूर्ण पुरुषोत्तम सर्व अवतारी श्री स्वामिनारायण भगवान का २३५ वर्ष पूर्व अवतार हुआ था। अमदावाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा से तथा कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी शा. हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में चैत्र शुक्ल ९ नवमी को श्रीहरि प्राकट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

प्रात: ७-०० बजे अक्षरभुवन में विराजमान बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न किया गया। दोपहर में १२-०० बजे प्रागट्य की आरती की गई थी। इस उत्सव के दर्शनार्थ अनेकों हरिभक्त पधारे थे।

रात्रि में ८ बजे से १० बजे तक संप्रदाय के सुप्रसिद्ध गायक प.भ. जयेशभाई सोनी तथा उनके सहयोगी कलाकारों ने नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन का गायन कके सभी को आनंदित कर दिया था। रात्रि में १०-१० बजे प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से घनश्याम महाराज की आरती की गई। जिसका दर्शन करके हजारो भक्त धन्य हो गये।

इस प्रसंग पर ब्र. पू. स्वा. राजेश्वरानंदजी, हरिचरण स्वामी (कलोल), भंडारी जे.पी. स्वामी, को.जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी इत्यादि संत मंडलने सुंदर आयोजन किया था। (शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर माणेकपुर (चौधरी) श्री घनश्याम चरित्र दशाब्दी महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत शा.पी.पी. स्वामी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा से तथा स्वा. देवप्रसाददासजी (मूलीवाला) एवं समस्त सत्संग समाज एवं युवक मंडल के आयोजन से ता. ३०-३-१७ से ता. ३-४-१७ तक श्री घनश्याम त्रिदशाब्दी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गांधीनगर) के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत कथा का पंच दिनात्मक सुंदर आयोजन किया गया था। ३० वर्ष पूर्व स.गु.स्वा. करशनदासजीने इस गाँव में भव्य मंदिर का निर्माण कार्य करवाया था। जिस में ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा प.पू. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के हाथों हुई थी। गाँव के हरिभक्त छोटी-बड़ी सेवा का लाभ लिये थे।

इस प्रसंग पर सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था। जिस में भजन कीर्तन, कृष्ण जन्मोत्सव, रुक्मिणी विवाह, ठाकुरजी का अभिषेक, श्रीहरियाग, अन्नकूट इत्यादि कार्यक्रम किये गये थे।

कथा के समय ता. ३०-२-१७ को प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। सभी को दर्शन देकर आशीर्वाद दिये थे। बहनों को दर्शन देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। कथा श्रवण करके आशीर्वाद प्रदान की थी। ता. ३-४-१७ को प.पू. आचार्य महाराजश्री पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारकर कथा में पूर्णाहुति की आरती तथा श्रीहरियाग की पूर्णाहुति की आरती उतारकर सभीको आशीर्वाद दिये थे।

इस प्रसंग पर अनेकों धाम से संत पधारे थे। जिस में महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी स.गु.शा. हरिकेशवदासजी, भंडारी स्वामी जानकीवल्लभदासजी, स.गु. स्वा. ब्र. राजेश्वरानंदजी, स्वामी देवप्रसाददासजी तथा स्वामी माधवप्रसाददासजी इत्यादि संत पधारे थे। पांच दिन तक गाँव को तथा आगंतुक भक्तों को भोजन का प्रसाद दिया गया था। (श्री न.ना.युवक मंडल माणेकपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका श्री हनुमान जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा धोलका मंदिर के महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी एवं कोठारी स्वामी सत्यसंकल्पदासजी की प्रेरणा से सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के चरणों से पवित्र तीर्थ भूमि धोलका नगरी में स.गु. गोपालानंद स्वामीने जहाँ पर ब्रह्म राक्षस का उद्धार किया था उसी भूमि पर परमकृपालु स्वामिनारायण भगवानने श्री मुरलीमनोहरदेव हरिकृष्ण

महाराजकी प्रतिष्ठा करके मोक्ष का मार्ग खोल दिया था। उसी मंदिर में चैत्र शुक्ल-१५ को श्री हनुमान जयंती के अवसर पर मारुतियज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसके यजमान प.भ. राजेन्द्रसिंह हेमंतसिंह (बालथेरा) परिवारने सुंदर लाभ लिया था। दूसरे अन्य ११ यजमान बनकर पूजन का लाभ लिये थे। पूज्य महंत स्वामी के सभी संत-पार्षद मंडल ने सुंदर सेवा की थी।

(शा. अजय स्वामी - धोलका)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सोनारडा त्रिदिनात्मक पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल एवं सोनारडा के सत्संग समाज के आयोजन से तथा पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में ता. २-३-१७ से ता. ५-३-१७ तक ''आदर्श भक्त गाथा'' त्रिदिनात्मक रात्रीय पारायण स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्ता पद पर हुई थी। गाँव के तथा गाँव के अगल-बगल के लोग भी इस कथा का लाभ लिये थे। प.पू. लालजी महाराजश्री इस अवसर पर पधारकर सभीको हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। अनेक धामों से संत पधारकर अपनी अमृतवाणी का लाभ दिये थे। पारायण के समय सभा संचालन नारायणमुनि स्वामीने किया।

(श्री न.ना.युवक मंडल - सोनारडा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाजी की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर में बहनो की भव्य सत्संग सभा का आयोजन ता. २६-३-१७ को किया गया था। कालुपुर मंदिर से पू. सां.यो. बहनें पधारकर कथा का सुंदर लाभ दी थी। समग्र सभा का आयोजन मंदिर के महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजीने किया था।

ता. २४-३-१७ को एकादशी के दिन प.भ. बाबुभाई कोदरभाई पटेल के यहाँ सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। ता. ७-४-१७ को एकादशी के दिन प.भ. दिलीपकुमार सुथार के यहाँ सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में बडी संख्या में भक्तों ने लाभ लिया।

(संजयकुमार कनुभाई ओझा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल १०५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुर धाम के शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी एवं पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल का १०५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. ६-४-१७ को धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आरती विवेचन पर त्रिदिनात्मक रात्रीय कथा स्वामी भक्तिनन्दनदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी। यह आयोजन ३-४-१७ से ५-४-१७ तक किया गया था। कथा की पूर्णहुति के बाद रात्रि में श्रीहरि का प्रागट्योत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

ता. ६-४-१७ को प्रातः मंदिर में विराजमान श्रीहरि का पूजन अर्चन यजमान परिवारने किया। पू. महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा श्याम स्वामी के वरद् हाथों से श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार पूजन किया गया था। प्रासंगिक सभा में अमदावाद, मूली, जेतलपुर से संत पधारकर आशीर्वाद दिये थे। पाटोत्सव के यजमान प.भ. घनश्यामभाई सोनी तथा उनके पुत्र का सन्मान किया गया था। आगामी १०६ वाँ पाटोत्सव के यजमान को आशीर्वाद दिया गया था। संतोने अन्नकूट की आरती उतारी थी। सभी प्रसाद ग्रहण कर प्रस्थान किये थे। (कोठारीश्री मांडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पार्क १९ वाँ पाटोत्सव रात्रीय पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कर्मशक्ति पार्क का १९ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा का पारायण ता. ११-४-१७ से १५-४-१७ तक स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापदर पर सम्पन्न हुआ। इस कथा के अवसर पर अन्य कार्यक्रम भी किये गये थे। छोटे-बड़े हरिभक्त सभी मिलकर यजमान बनकर लाभ लिये थे। ता. १६-४-१७ को संगीत संध्या का भी कार्यक्रम किया गया था।

ता. १२-४-१७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे तथा ठाकुरजी की आरती उतारकर सभा में सभीको आशीर्वाद दिये थे। अनेक धामों से संत पधारे थे। जिस में कालुपुर से महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी पधारे थे। श्री नरनारायण युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी।

(कोठारीश्री कर्मशक्ति मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा ३५ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) तथामहंत स्वामी

भक्तिकेशवदासजी तथा कोठारी उनावा तथा सत्संग समाज के आयोजन से यहाँ के मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का ३५ वाँ पाटोत्सव वैशाख शुक्ल-३ अक्षय तृतीया को धूमधाम से मनाया गया था। इस अवसर पर ता. २७-४-१७ से १-५-१७ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा का पारायण स्वामी चैतन्यस्वरुपदास तथा स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। इस अवसर पर यजमान भक्तोंने सुंदर लाभ लिया था। रात्रीय कार्यक्रम में अश्विनभाई जोषी ने सुंदर कीर्तन गाकर सभी को आनंदित किया था।

इस प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी सभीको आशीर्वाद देकर आनंदित हुई थी। अनेक धामों से संत पधारे थे। प्रसंग की व्यवस्था में स्वामी प्राणजीवनदासजी, स्वामी बालस्वरुपदासजी, व्रज स्वामी, गोपालजीवनदासजी थे। गाँव के तथा अगल बगल के भक्तोंने कथा श्रवण का लाभ लिया। (कोठारीश्री उनावा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उमेदगढ ३४ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा इडर के महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर उमेदगढ का ३४ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। इस प्रसंग पर महापूजा का भी आयोजन किया गया था। पाटोत्सव के यजमान परेश परसोतमभाई थे। संतोने कथा का लाभ दिया था। के. आर. पटेल ने सभा संचालन किया। सभी कथा श्रवण दर्शन प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किया। (कांतिलाल आर. पटेल - उमेदगढ)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बापुपुरा कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से बापुपुरा मंदिर में ता. ६-४-१७ से १०-४-१७ तक स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर कथा पारायण संपन्न हुई थी। इस कथा में विदुरनीति पर व्याख्यान रखा गया था। बड़ी संख्या में हरिभक्त कथा का लाभ लिये थे। इस कथा के अवसर पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की आज्ञा से महिला मंडल ने सुंदर सेवा की थी।

पारायण की पूर्णाहुति पर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर से महंत स्वामी संत मंडल के साथ पधारकर सभा में आशीर्वाद प्रदान किये थे। भक्तों को नास्तारुप प्रसाद की व्यवस्था की गई थी। (बालस्वरुपदासजी - गांधीनगर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

भक्तिनगर (ता. हलवद) मंदिर में महामंत्र धून

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूलीधाम के अ.नि. विज्ञानदासजी की दिव्य प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोके) हलवद में (गौरी दरवाजा) दशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर भक्तिनगर मंदिर में (दोनो मंदिर) ता. २०-३-१७ को १२ घन्टे की महामंत्र धून रखी गयी थी। पूर्णाहुति के प्रसंग पर श्रीजी स्वरुप स्वामी तथा व्रजवल्लभ स्वामी इत्यादि संत मंडलने मंत्र की महिमा को समझाया था। इसी तरह सां.यो. अनुसूयाबा तथा सां.यो. बनीताबा ने भी माहात्म्य समझाया था।

(कोठारीश्री भक्तिनगर)

नारीयाणा तथा बावली गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नारीयाणा तथा बावली गाँव में ता. ९-४-१७ को स.गु. स्वा. भक्तिहरिदासजी की प्रेरणा से सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर ध्रांगध्रा - सुरेन्द्रनगर - मोरबी से संत पधारे थे। श्रीहरि के गूढ संकल्प मंदिर - देव - आचार्य महाराजश्री तथा सत्शास्त्र में श्रीहरि प्रत्यक्ष बिराजमान हैं। इसी तरह की समझ संतो ने सभी को दी थी। सभा संचालन भक्तिनंदन स्वामीने किया था।

(प्रति. अनिलभाई दुधरेजिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी (सरदारबाग)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर विराजमान घनश्याम महाराज तथा महाप्रतापी राधाकृष्णदेव के सानिध्य में मंदिर के विद्वान संत भक्तिनंदनदासजी के मार्गदर्शन में मंदिर के बगल में पू. महाराजश्री की आज्ञा से नूतन संपादित विशाल जगह में ता. २३-४-१७ एकादशी को परमपवित्र अवसर पर एक सभा का आयोजन किया गया था। जिस में बड़ी संख्या में नर-नारी एकत्रित होकर सत्संग का लाभ लिये थे। प्रति एकादशी को रात्रि में ९-०० बजे से १०-०० बजे तक सत्संग सभा का आयोजन किया जायेगा। संतो के सहयोग से देव-आचार्य में सत्संग की दृढ निष्ठा बढी है। यहाँ के विस्तार में स्वामिनारायण संप्रदाय के प्रति दृढता बढ रही है। (महंत स्वामी - मोरबी)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर ओकलेन्ड (न्युजीलेन्ड)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अमदावाद कालुपुर मंदिर के सुप्रसिद्ध विद्वान कथाकार शा.स्वा. निर्गुणदासजी, घनश्याम स्वामी इत्यादि संत मंडल द्वारा ता. १६-४-१७ चैत्र कृष्ण-५ रविवार को मंदिर का ९ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट आरती की गई थी । शा.स्वा. ने सुंदर कथा का लाभ दिया था । यहाँ के प्रेसीडेन्ट डॉ. कांतिभाई ने अपने भाव व्यक्त किये थे । इसके साथ ही वहाँ के सेवाभावी लोगो का सन्मान भी किया गया था । इस उत्सव के यजमान विलम जयन्तीभाई पटेल तथा ब्रिजेशभाई पटेल थे । इस मंदिर में प्रति गुरुवार को वृद्धजनो द्वारा सभा की जाती है । राम नवमी-हरि जयंती श्री नरनारायणदेव जयंती, फुल दोलोत्सव चालीसा का पाठ किया गया था । जिस में ७०० जितने भक्त दर्शन का लाभ लिये थे । कथा श्रवण एवं प्रसाद ग्रहण करके धन्यता का अनुभव किये । (तुषारभाई शास्त्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शिकागो मंदिर के महंत शा.स्वा. यज्ञप्रकासदासजी तथा पुजारी शांतिप्रकाशदासजी की प्रेरणा से मंदिर में सत्संग सभा, श्रीहरि प्राकट्योत्सव, रामनवमी, हनुमान जयन्ती इत्यादि उत्सव धूमधाम से मनाये गये थे ।

निष्कुलानंद स्वामी द्वारा विरचित श्रीहरि स्मृति नवान्ह पारायण स्वामी यज्ञप्रकाशदासजीने किया था । यजमान ममताबहन दिनेशभाई पटेल थी । सभी पूजन कार्यक्रम दिनेशभाई जोषीने करवाया था । (वसंत त्रिवेदी - शिकागो)

डलास (टेक्सास) में प.पू. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में सत्संग प्रचार

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से डलास सीटी में २४ मार्च को एकादशी को हिन्दु मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में पू. पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), शा. धर्मकिशोरदासजी (कोलोनीया) इत्यादि संतो की उपस्थिति में सत्संग को विशेष पोषण मिले हरिभक्तों में आत्मीय भाव बढे देव-आचार्य मे निष्ठा बने इसके लिये सभा का आयोजन किया गया था । सत्संग सभा में संतोने भगवान स्वामिनारायण का माहात्म्य समझाया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री द्वारा हो रही प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला गया । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने डलास में सत्संग में उत्तरोत्तर वृद्धि हो ऐसा आशीर्वाद दिया था । ह्युस्टन से पधारे हुये नवयुवक महाराजश्री की आज्ञानुसार सेवा करने में तत्पर हैं ऐसा निवेदन किया था । बाद में सभी भोजन का प्रसाद लेकर विसर्जित हुए थे । (प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा यहाँ के महंत स्वामी धर्मकिशोरदासजी की प्रेरणा कोलोनीया स्वामिनारायण मंदिर में ता. १-३-१७ को सर्व प्रथम गणेश उत्सव मनाया गया था । भगवान की पालकी की शोभायात्रा निकाली गई थी । यजमान परिवार तथा अन्य हरिभक्त पालकी के साथ में मंदिर की प्रदक्षिणा किये थे । सभी हरिभक्त धुन-कीर्तन करते हुए प्रदक्षिणा किये । बाद में गणेशजी को मंदिर में लाकर सिंहासन पर विराजमान किया गया था । कौशिकभाई भावसार श्री नयनभाई परीख की सेवा सराहनीय थी । महंत स्वामीने गणेशजी भगवान की महिमा समझाई थी । आरती के बाद भोजन लेकर सभी प्रस्थान किये थे । (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेक्सास १७ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में १७ वाँ पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में मनाया गया था । इस प्रसंग पर संतो में जेतलपुर से पू. पी.पी. स्वामी, भक्तिनंदन स्वामी, नीलकंठ स्वामी, जेक्सन मंदिर के दिव्यप्रकाश स्वामी, पारसीप के धर्मविहारी स्वामी, कलिवलेन्ड से ज्ञान स्वामी, एलनटाउन से नरेन्द्र भगत पार्षद वनराज भगत इत्यादि संत पार्षद तथा हजारो हरिभक्तों की उपस्थिति में १२ से १९ मार्च तक श्रीमद् भागवत के नवम स्कन्धकी कथा शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर संपन्न हुई थी । पाटोत्सव के यजमान प.भ. गोविंदभाई पटेल (प्रेसीडेन्टश्री) परिवार थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से पाटोत्सव संपन्न हुआ था । अन्नकूट का दर्शन करके सभी आनन्दित हुये थे । बालकों द्वारा संस्कृतिक कार्यक्रम किया गया था । प.पू. महाराजश्री सत्संग प्रचार की प्रक्रिया समझाये थे । सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । ५७६ एकड जमीन में संपन्न होने वाला यह सबसे बडा

प्रोजेक्ट होगा । इस में सभी को योगदान करने की वात की थी। (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर श्री रामनवमी तथा श्री स्वामिनारायण जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ५-४-१७ बुधवार को स्वामिनारायण जयंती के उपलक्ष्य में प्रातः १० बजे से १२ बजे श्री रामचंद्र भगवान का जन्मोत्सव तथा सायंकाल ६-०० बजे से ८-०० बजे तक भगवान स्वामिनारायण का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

सायंकाल ७-०० बजे धर्मकिशोर स्वामीने भगवान के प्रगट होने की सुंदर कथा की थी । ८ बजे प्रागट्योत्सव मनाया गया था । उत्सव के यजमान श्री ऋतुलभाई गिरीशभाई पटेल परिवार थे । धर्मकिशोर स्वामी के मार्गदर्शन में छपैयधाम की प्रतिकृति बनाई गई थी।

ता. ९-४-१७ रविवार को समूह महापूजा का आयोजन किया गया था । जिसकी यजमान गं.स्व. कस्तूरबहन आणंदभाई टांक परिवार था । अंत में भोजन प्रसाद लेकर विसर्जन हुआ था।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से लेस्टर मंदिर में सुंदर सत्संग प्रवृत्ति चल रही है।(किरण भावसार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट नये महंत स्वामी की नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट - नये महंत के रुप में स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी देवकृष्णदासजी (गांधीनगर महंतश्री) तथा जोइन्ट महंत पद पर शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी गुरु सगु. स्वामी देवप्रकाशदासजी की नियुक्ति की गई है।

ब्राह्मण विद्यार्थीयो के लिये जेतलपुर में एकमात्र विद्यालय में विना मूल्य के शिक्षण में प्रवेश (कक्षा ९-१०-११-१२)

आदि आचार्य अयोध्याप्रसाद महाराजश्री द्वारा स्थापित तथा प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर धाम द्वारा संचालित श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय (१९२) एक सौ बानवे वर्ष पुरानी पाठशाला है । जिस में गुजरात राज्य सरकारकी तथा श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी की मान्य कक्षा ९ से डिग्री तक अभ्यासक्रम चलता है । गुजरात राज्य सरकार मान्य संस्कृत-अंग्रेजी-हिन्दी-गुजराती-कोम्प्टुयर-ज्योतिष - कर्मकांड इत्यादि विषय पढाया जाता है । कक्षा ८ पास विद्यार्थियोंको ९ वीं कक्षा में प्रवेश मिलता है । इस संस्था में रहने खाने-पढने की विना मूल्य से सुविधा मिलती है । संप्रदाय में एकमात्र निःशुल्क शिक्षण देनेवाला संस्कृत विद्यालय जेतलपुर अक्षर फुलवाडी में चलता है । यहाँ पर ब्राह्मण बालको के लिये यह विद्यालय है तो इस विद्यालय में अपने पुत्र को उच्च शिक्षण देना होतो एडमीशन के लिये १५-५-१७ से ३०-५-१७ तक प्रातः ८ से ११ बजे तक प्रवेश स्वीकृति प्राप्त कर सकते हैं । श्री रेवती बलदवेजी हरिकृष्ण महाराज का दिव्य सानिध्य तथा प्रसादी की मौलश्री की छाया युक्त सुंदर देवसरोवर एवं अक्षर फूलवाडी की त्रिवेणी संगम में धर्म संस्कार के साथ शिक्षण प्राप्त कर सकेंगे ।

ब्राह्मण कुमारों को शास्त्र के अनुसार जन मंगल, नारायण कवच, हनुमान स्तोत्र, हरियाग, मारुति याग, गौपूजन इत्यादि हवन पुरश्चरण का कार्यभी फूलवाडी में प्रेक्टिकल के लिये कराया जाता है । इसलिये जो भी सत्संगी हवन पुरश्चरण कराने चाहते हैं वे संपर्क निम्न फोन पर कर सकते हैं।

प्रधान अध्यापकश्री : ९८२५३४७९६९ ● बी.डी. पुरोहित : ९४२७०३३७८०

लिखा : महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी - जेतलपुरधाम

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

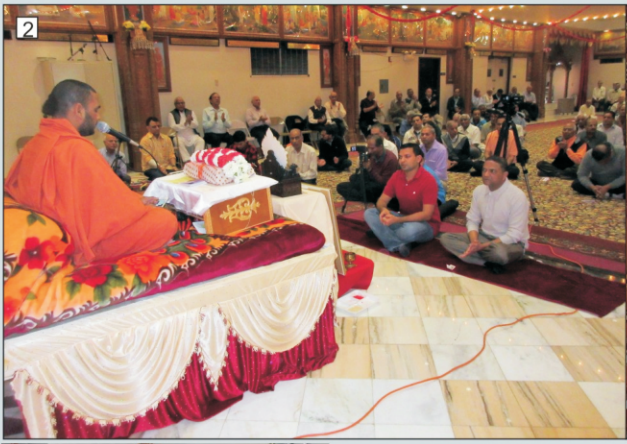

(१) शा. स्वामी निर्गुणदासजी ओकलेन्ड (न्युजीलेन्ड) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए और हरिभक्त आरती के दर्शन करते हुए। (२) हरिभक्त शिकागो मंदिर में कथा-पारायण का श्रवण करते हुए। (३) लेस्टर (यु.के.) मंदिर में रामनवमी के पावन दर्शन। (४) नवा गाम मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी के सन्मुख अन्नकूट दर्शन। (५) कालुपुर मंदिर के शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी बापुपुरा में रात्रीय-पारायण की व्यास पीठ की आरती उतारते हुए और पी.पी. स्वामी-गांधीनगर उद्बोधन करते हुए। (६) हरिद्वार में श्री स्वामिनारायण मंदिर, गांधीनगर (सेक्टर-२) द्वारा आयोजित कथा-पारायण। (७) अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी एवं शा.स्वामी नारायणमुनिदासजी के साथ माणेकपुर (चौधरी) गाँव के किसान हरिभक्त।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

(१) स्वामिनारायण मंदिर, सीडनी ब्लेकटाउन के १२ वें पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

(२) प.पू. आचार्य महाराजश्री जेकशनवीले (अमेरिका) मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा करते हुए और सभा में दर्शन देते हुए ।

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से
श्री बालस्वरुप घनश्याम महाराज विराजित जीर्णोध्धारित
अक्षर भुवन (कालुपुर) मंदिर के उद्‌घाटन प्रसंग पर

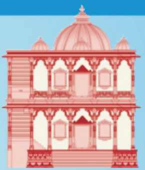

मंगल कार्यक्रम

श्री घनश्यामलीलामृत कथा
वक्ता स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल)

प्रारंभ : ३१-५-२०१७ बुधवार

कथा समय : प्रतिदिन रात्रि में ८-०० से ११-००
पोथीयात्रा : ता. ३१-५-१७ रात्रि में ७-३० बजे
श्री घनश्याम जन्मोत्सव ता. ३१-५-१७ रात्रि में १०-४५ बजे

पूर्णाहुति : ४-६-१७ रविवार

ता. ४-६-२०१७ रविवार

अभिषेक प्रात: ६-३० बजे अन्नकूट तथा श्रृंगार आरती प्रात: ८-१५ बजे

सायंकाल - कथापूर्णाहुति - मंदिर उद्घाटन आतिशबाजी तथा रंगारंग कार्यक्रम रात्रि में ९-३० से १०-३०

नोट: • कथा के बाद प्रतिदिन नास्तारुप प्रासद की व्यवस्था है ।
• महोत्सव के समय अमदावाद के प्रत्येक विस्तार से वाहन की व्यवस्था की गई है ।
इसलिये स्वयं के बाहन लाने की आवश्यकता नहीं है, मंदिर में पार्किग नहीं है ।

સમગ્ર મહોત્સવ નું લક્ષ્ય ચેનલ પર લાઈવ પ્રસારણ કરવામાં આવશે

स्थल : श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अमदावाद-१

आयोजक : महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी - श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अमदावाद.

सूचना : अब से श्री नरनारायणदेव देश के मंदिरों की पत्रिका अथवा बेनर कालुपुर मंदिर में मात्र डीजीटल फोर्म में रखा जायेगा । इसके लिये आप kalupurmandir@gmail.com पर अपनी डीजाईन भेजियेगा वोट्स अप पर नहीं भेजियेगा । - आज्ञा से

Praful Kharsani